ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 294-295

ISSN NO.-2347-2944
Vol.-9, No.-II, Issues-10 YEAR- Dec -2018

पं0 दीनदयाल उपाध्याय के परिप्रेक्ष्य में एकात्यमानववादी शिक्षा की अवधारणा एवं उसका स्वरूप

डॉ0 राकेश गुप्ता

एसो0 प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष– समाजशास्त्र विभाग, नेशनल पी0 जी0 कालेज, भोगांव– मैनपुरी (उ0प्र0) भारत

Received- 10.11.2018, Revised- 16.11.2018, Accepted - 19.11.2018 E-mail: aaryvart2013@gmail.com

सारांश : व्यष्टि और समष्टि को जोड़ने वाली प्रमुख कड़ी है – शिक्षा। शिक्षा ही सभ्यता का मापदण्ड निर्धारण करता है। यही कारण है सभी महापुरूषों ने भारतीय पद्धति से शिक्षा देने की बात कही हैं। वे चाहें महात्मा गांधी हो, विनोवा भावे या पं० दीनदयाल उपाध्याय जी। शिक्षा ही व्यष्टि और समष्टि को जोड़ने का प्रमुख सूत्र है। समाज निर्माण मूलतः एक शिक्षा प्रक्रिया है। पं० दीनदयाल जी ने ब्रिटिश कालीन शिक्षा से प्रभावित वर्तमान शिक्षा प्रणाली को अनुपयोगी मानते हुए उसे भारतीय परिवेश और आवश्यकताओं के अनुरूप आध्यात्मिक मूल्यों और मानवीय आदर्शों से पोषित कर जीवनोपयोगी बनानें के लिए एकात्मवादी शिक्षा दर्शन का सिद्धान्त प्रतिपादित किया।

कुंजी शब्द – मूल्य, संस्कृति, अध्यात्म, पुरूषार्थ, चिन्तन, मस्तिष्क, अस्तित्व, नास्तित्व, समन्वय, मनोवैज्ञानिक।

शिक्षा की व्यवस्था को स्पष्ट करते हुए पंडित जी कहते है– शालेय (विद्यालयी) शिक्षा अकेली ही मनुष्य का निर्माण नहीं कर सकती है। संस्कार एवं अध्यापन के बहुत से ऐसे क्षेत्र हैं। जो शालेय क्षेत्र से बाहर हैं। यदि इन दोनों क्षेत्रों में विरोध रहा तो विद्यार्थियों के जीवन में एक अन्र्तद्वन्द्व उपस्थित हो जाता है। एक समन्वित एकी.त सर्वांगपूर्ण, अखण्ड व्यक्तित्व का विकास होने के स्थान पर उसकी प्र.ति में विभक्त निष्ठाओं का समावेश हो जाता है । सभा और उसके बीच में खाई पड़ जाती है।

इसी प्रकार महात्मा गांधी ने भी शिक्षा के सम्बंध मे अपने बिचारों को व्यक्त करते हुए कहा है कि– सच्ची शिक्षा वही होती है जो आध्यात्मिक, बौद्धिक तथा आर्थिक तीनों शक्तियों का एक साथ विमोचन करे, स्कूल से निकलने वाले युवक का अब मैं क्या करू? ऐसी स्थिति नही होनी चाहिए। उसकी शिक्षा तो उसके मे रूचि एवं क्षमता के अनुरूप प्रतिभाशाली बालको को उस क्षेत्र की उच्च शिक्षा एवं अन्य को उसी आधार पर अद्योग आधारित शिक्षा देने के पक्षधर मे जिसका स्वरूप क्रियात्मक था।

शिक्षा इस प्रकार उद्देश्य प्राप्ति का सशक्त माध्यम है। शिक्षा ही व्यष्टि एवं समष्टि की एकता का प्रथम सूत्र है। इसी लिए कहा गया है की भारत के भविष्य का निर्माण उसकी उसकी कक्षाओं में होता है। सामान्य रूप से यह कहा जाता है कि जैसी देश की शिक्षा व्यवस्था होगी देश में वैसे ही नागरिकों का निर्माण होगा । इसमें कोई संदेह नही कि वर्तमान शिक्षा व्यवस्था भौतिकवादी है तथा मूल्यो की दृष्टि से विचार करने पर इसमें केवल प्रयोजनवादी मूल्य ही मुख्य रूप से परिलक्षित होते हैं।

उपर्युक्त वक्तव्यों से यह कहा जा सकता है कि दीनदयाल जी शिक्षा के द्वारा व्यष्टि एवं समष्टि को जोड़ने वाला सूत्र मानते हैं। समाज में शिक्षा के स्थान की प्राथमिकता एवं गरिमा का बोध कराते हुए दीनदयाल जी कहते है, हमारे शस्त्रकारों के अनुसार यह ऋषि ऋण है जिसे प्रत्येक का कर्तव्य है।

दीन दयाल जी सभी के लिए निशुल्क सर्वशिक्षा के पक्ष में थे। वे कहते थे कि शिक्षा का

न्याय राज्य द्वारा होने के उपरान्त भी उसका सरकारीकरण नहीं होना चाहिए। प्रत्येक क्षेत्र में शिक्षा संस्थाओं का प्रबंध करने के लिए शिक्षकों तथा शिक्षा विद के स्वायत्र निकाय होने चाहिए। शासक विभाग के अन्तर्गत उसको चलाना ठीक नही हैं सरकारी और गैर सरकारी शिक्षा संस्थाओं का भेद समाप्त कर देना चाहिए। सभी क्षेत्र के शिक्षकों के वेतन क्रम व अन्य सुविधाएं ऐसी हो जिससे योग्य व्यक्ति शिक्षा क्षेत्र में आने में संकोच न करे। शिक्षा संस्थाओं प्रबंधकों या प्रबन्ध समितियों की निजी सम्पत्ति बनने देना उचित नहीं।

दीनदयाल जी शिक्षा के सरकारीकरण के विरूद्ध थे, किन्तु वे प्रबन्धधिकरणों के निजी स्वामित्व के भी विरोधी थे।

वे शिक्षा व्यवस्था के सफल संचालन के लिए शिक्षाविदों, बुद्धिजीवियों, विषय विशेषज्ञो के स्वायन्त्रशासी आयोग द्वारा संचालन के पक्ष में थे। अधिकारों का दुरूपयोग कर शिक्षा संस्थाओं द्वारा निजी सम्पत्ति बनाना समाज के साथ दुराचरण है। हम सबका कर्तव्य है कि समाज के निर्धन, दलित शोषित आदिवासियों, गिरिवासियों के बीच ज्ञान दीप जला कर शिक्षा उन्नयन के राष्ट्रीय यज्ञ मे सहयोग करें।

वे कहते हैं की– शिक्षा का व्यय राज्य द्वारा होने के उपरान्त भी इसका सरकारीकरण नहीं होना चाहिए।

अनुरूपी लेखक

सरकार के विभाग के रूप में उसका चालाना ठीक नही। सरकारी और गैर सरकारी संस्थाओं का भेद समाप्त कर देना चाहिए। सभी क्षेत्र के शिक्षकों के वेतन क्रम व अन्य सुविधाएं ऐसी हों जिससे योग्य व्यक्ति शिक्षा क्षेत्र में आने से संकोच न करें। शिक्षा संस्थाओं को मैनेजरों अथवा प्रबंध समिति की निजी सम्पत्ति बनने देना उचित नहीं है।

भारत में ईसाई मिसनरियों का शिक्षा के क्षेत्र में बर्चस्व बढता जा रहा है। बहुत से भारतीया इनमें अपने बच्चों की शिक्षा देना गर्व का विषय समझते हैं। वे मानते हैं कि मजहबी आधार पर चलने वाली विशेषकर ईसाई मिशनरी संस्थाओं को खतरनाक मानते हैं–

" किसी भी बाहरी शक्ति का हस्तक्षेप देश की आंतरिक स्थिति एवं उनकी आधारभूत संस्थाओं में अनुचित माना जाता हैं। हम अपनी राजनीति पर किसी का हस्तक्षेप एवं प्रभाव नही सहन कर सकते। आर्थिक क्षेत्र में बाहरी सहायता व पूँजी – भय का कारण बन जाती है।

शिक्षा के क्षेत्र में विदेशियों कों अधिकार देना कहाँ तक उचित है? अपरिपक्व मस्तिष्क पर विदेशी शक्तियों का प्रभाव डालने की अनुमति देना जड़ को काटने की स्वतंत्रता देना है।"

इस प्रकार हम देखते है कि वे शिक्षा के साथ किसी प्रकार के समझौतावादी द्रष्टिकोंण के पक्ष में नहीं हैं। वे शिक्षा के क्रियात्मक स्वरूप के पक्षधर थे। इसीलिए उन्होने हाथ से काम करते हुए सोंचना एवं अपनी सोंच को क्रियान्वित करना निपुणता प्राप्ति का एकमेव मार्ग माना। इसी द्रष्टि से शिक्षालयों को कुटीर उद्योगों हस्तशिल्प, षि एवं पशुपालन, मत्स्यपालन आदि से जोड़कर शिक्षा के व्यावसायिक रूप प्रदान किया जो वर्तमान समय में अत्यन्त उपादेय है। वे सबको एक प्रकार की शिक्षा देना नही चाहते थे बल्कि क्षेत्र विशेष में एकता की स्थापना करते हुए इसे इहलौकिक एवं पारलौकिक जीवन में मनुष्य के उत्थान का साधन बनाना चाहते थे।

उनके अनुसार यह तभी संभव है जब आधुनिक ज्ञान विज्ञान को धर्म एवं संस्.त से संयुक्त कर समाज एवं सांमजस्य की भावना पैदा की जाये। व्यावहारिक अर्थो में यही उनकी एकात्म मानववादी अवधारणा है।

जीविका का एक प्रकार से गारंटी होना चाहिये।

इसप्रकार हम देखते हैं कि सभी महापुरूष शिक्षा को मात्र किताबी ज्ञान नहीं माना बल्कि व्यक्ति के सम्पूर्ण विकास का आधार माना है। शिक्षा समाज व राष्ट्र को वैभवशाली बनानें के लिए भाग्य रेखा के रूप में काम करती है। अतीत से लेकर वर्तमान तक विश्व के सभी राष्ट्रों का भाग्य और भविष्य उस देश की शिक्षा व्यवस्था ने ही निर्धारित किया है। हमारे देश में भी जब तक तक्षशिला, नालन्दा जैसे विश्वविख्यात शिक्षा केन्द्र थे।

तब सम्पूर्ण शिक्षा प्रणाली सांस्.तिक मूल्यों पर आधारित थी। समाज की सभी शालाएं धर्मों की भौतिक एवं आध्यात्मिक अन्तर्निहित शक्तियों के सर्वांगीण विकास के जागरण की केन्द्र थी, तभी हमारा देश और समाज अपने गौरवशाली वैभव के शिखर पर था।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. पृ.60 दूबे डा0 राकेश ; एकात्यमानव वादी शिक्षा दर्शन : ेज त्र क 2014 ई0; विद्याभारती संस्.ति शिक्षा संस्थान, कुरूक्षेत्र (हरियाणा)
2. पृ. 72 त्रिपाठी डा0 प्रयाग नारायण महात्मा गांधी एवं पं0 दीनदयाल उपाध्याय कें जीवन दर्शन में साम्य; ेज त्र क जुलाई 2013 ई0 ; लोकहित प्रकाशन, लखनऊ
3. पृ. 74 तथैव
4. पृ. 278, 279 शर्मा डा0 महेशचन्द्र पं0 दीनदयाल उपाध्याय; कर्तव्य एवं विचार; सं0 2017 ई0 ; प्रभात पेपर बैक्स, नई दिल्ली
5. पृ. 279 तथैव

*****